1. महाराणा प्रताप महाविद्यालय : स्थापना

1932 ई0 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना गोरक्षपीठाधीश्वर युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के प्रसार को लोकजागरण और राष्ट्रीय पुननिर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए किया था। उन्होने अपने द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' को तत्कालीन गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि–भवन एवं अध्ययापक–छात्र सहित सरकार को प्रदान कर दिया। सम्प्रति गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव पड़ी। उसी स्मृति को पुनर्जीवित करते हुए गोरखपुर महानगर की नगरीय शिक्षा–सुविधाओं से वंचित महानगर के उत्तरी–पूर्वी छोर पर स्थित जंगल धूसड़ ग्राम में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुणवक्तापरख उच्च शिक्षा प्रतिष्ठिता केन्द्र 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' का शिलायान्स 29 मई 2004 को तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के कर कमलो द्वारा किया गया। 29 जून 2005 को महाविद्यालय का लोकार्पण भारत सरकार के पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ0 मुरली मनोहर जोशी जी के कर कमलों एवं गोरक्षपीठाधीश्वर राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

स्थापना वर्ष 2005

2. स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय विवरण

सत्र 2005–2006

स्नातक स्तर–

कला संकाय	–	भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, प्राचीन इतिहास (अस्थायी सम्बद्धता)
विज्ञान संकाय	–	रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान (अस्थायी सम्बद्धता)
वाणिज्य संकाय	–	बी.काम (अस्थायी सम्बद्धता)

3. संस्था की वर्षवार प्रगति आख्या समस्त (विषय/संकाय) एवं विवरण

सत्र 2006–2007

कला संकाय	–	भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, प्राचीन इतिहास (स्थायी सम्बद्धता)
विज्ञान संकाय	–	रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान (स्थायी सम्बद्धता)
वाणिज्य संकाय	–	बी.काम (स्थायी सम्बद्धता)

सत्र 2007–2008

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली में धारा 2 (F) में महाविद्यालयय पंजीकृत (22 जून 2007)
- बी.एड्. पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2008–2009

- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर सांइस, इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी विषय में सम्बद्धता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय में सम्बद्धता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायनशास्त्र विषय में सम्बद्धता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास विषय में सम्बद्धता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2009–2010

- बी.एड्. पाठ्यक्रम हेतु निरीक्षण मण्डल द्वारा महाविद्यालय का निरीक्षण।

सत्र 2010–2011

- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर सांइस, इलेक्ट्रानिक्स, सांख्यिकी विषय में अस्थायी सम्बद्धता।
- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय में अस्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायनशास्त्र विषय में अस्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 12 (B) में पंजीकृत (30 अगस्त 2010)
- बी.एल.एड. (बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2011–2012

- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायन विज्ञान विषय में सम्बद्धता एक वर्ष विस्तारित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास विषय में सम्बद्धता एक वर्ष विस्तारित।

सत्र 2012–13

- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर सांइस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रानिक्स में एक वर्ष के लिए विस्तारित।

सत्र 2014–2015

- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय में प्राचीन इतिहास विषय में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय में रसायन विज्ञान विषय में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर सांइस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रानिक्स में एक वर्ष के लिए विस्तारित।?

सत्र 2015–2016

- स्नातक विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कम्प्यूटर सांइस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रानिक्स विषय में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातक कला संकाय में गृह विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत विषय अस्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र पाठ्यक्रम हेतु अस्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत एम.काम. पाठ्यक्रम हेतु अस्थ्यायी मान्यता।
- बी.एड. पाठ्यक्रम हेतु अस्थायी सम्बद्धता।

सत्र 2016–2017

- स्नातक कला संकाय में गृह विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत विषय में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र पाठ्यक्रम में स्थायी सम्बद्धता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर वाणिज्य संकाय में एम.काम. पाठ्यक्रम हेतु स्थायी सम्बद्धता।

सत्र 2017–2018

- स्नातक स्तर पर बैचलर ऑफ जर्नलिज्म (बी.जे) पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय।

संस्था की वर्षवार प्रगति का विवरण (महाविद्यालय भवन)

सत्र 2004–2005

- भूमितल प्रशासनिक भवन 10000 वर्गफीट
- प्रथम तल प्रशासनिक भवन 10000 वर्गफीट

- भूमितल प्रशासनिक भवन 10000 वर्गफीट
- प्रथम तल प्रशासनिक भवन 10000 वर्गफीट

सत्र 2010–2011

- प्रयोगशाला भवन 5000 वर्गफीट

सत्र 2011–2012

- द्वितीय तल प्रशासनिक भवन 10000 वर्गफीट

सत्र 2012–2013

- द्वितीय तल प्रयोगशाला भवन 7000 वर्गफीट

संस्था की वर्षवार प्रगति का विवरण (योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम)

सत्र 2014–2015

- भूमितल 15800 वर्गफीट

सत्र 2016–17

- प्रथम तल 15800 वर्गफीट

04. महाविद्यालय की विशेष उपलब्धियाँ

प्रार्थना सभा में श्रीमद्भगवद्गीता अथवा महापुरुषों की जयन्ती/पुण्यतिथि/महत्वपूर्ण दिवस प्रतिदिन

• प्रतिदिन महाविद्यालय की दिनचर्या का आरम्भ प्रार्थना सभा के साथ होता है, प्रार्थना सभा में सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत के साथ श्रीमद्भगवद् के पॉच श्लोक का वाचन एवं उसके भावर्थ का श्रवण अथवा महापुरुषों के जन्मदिन अथवा पुण्यतिथि पर उनका परिचय एवं उपलब्धियॉ।

• भारत–भारती पखवारा महाविद्यालय में 12 जनवरी से 26 जनवरी तक भारत–भारती पखवारा का आयोजन/ स्वामी विवेकानन्द जयन्ती महाराणा प्रताप पुण्यतिथि, नेताजी सुभाषचन्द बोस जयन्ती गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन सहित विविध प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। विजयी प्रतिभागियों को गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मानित किया जाता है।

लिखित वार्षिक पाठ्यक्रम योजना एवं कार्यावन्वयन

प्रतिवर्ष जुलाई माह में विषय वार प्रत्येक कक्षा का वार्षिक योजना तैयार कर 15 जुलाई तक महाविद्यालय की बेवसाइट (**www.mpm. edu.in**) पर अपलोड कर दिया जाता है और पाठ्यक्रम के योजनानुसार ही कक्षाओं का संचालन सुनिश्चित करने की सुचारू व्यवस्था होती है।

विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन

विद्यार्थियों के अन्दर से झीझक समाप्त करने और उनके व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से शिक्षक द्वारा प्रत्येक पॉच व्याख्यान के उपरान्त छवे व्याख्यान के दिन पूर्व निर्धारित विद्यार्थियों द्वारा पूर्व निर्धारित विषय/शीर्षक पर व्याख्यान दिया जाता है। इस योजना से विद्यार्थियों के अन्दर किसी विषय पर अपनी बात रखने, समझने के साथ–साथ आत्म विश्वास का भी भाव पैदा होता है। उस दिन शिक्षक विद्यार्थियों के बीच में बैठतें है। विद्यार्थी द्वारा कक्षाध्यापन पाठ्यक्रम योजना में उल्लिखित होता है।

विद्यार्थियों का महाविद्यालय प्रशासन में सहभागिता

महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यो में विद्यार्थियों का सक्रिय सहभाग महाविद्यालयी कार्य–संस्कृति का हिस्सा है। विभिन्न समितियों के माध्यम से विद्यार्थी महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक निकायों में प्रतिनिधि करते हैं यथा–प्रवेश समिति, छात्र नियन्ता, छात्र पुस्तकालय समिति, छात्र–क्रीड़ा समिति, छात्र–प्रयोगशाला समिति, छात्र सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति, छात्रा समिति, स्वच्छता समिति, छात्रवागवानी समिति, छात्र–प्रार्थना समिति इत्यादि।

स्वैच्छिक साप्ताहिक श्रमदान

महाविद्यालय में स्थापना काल से प्रत्येक शनिवार को तीसरी घण्टी के पश्चात् (12.10 से 01.10 बजे) एक घण्टे का स्वैच्छिक श्रमदान कार्यक्रम योजनापूर्वक सम्पन्न होता है। उसदिन कक्षाएं 40 मिनट की चलती है तथा मध्यावकाश स्थगित रहता है। श्रमदान में प्राचार्य शिक्षक, कर्मचारी और छात्र–छात्राएं सम्मिलित होते है। इस योजना से साफ–सफाई हेतु जागरूक करने के साथ–साथ तत् सम्बन्धित लोगों का महाविद्याल से अपनेपन का भी जुड़ाव होता है।

छात्रसंघ

महाविद्यालय मे स्थापना काल से ही छात्रसंघ का गठन प्रत्येक सत्र में शैक्षिक पचांग में उल्लिखित तिथि के अनुसार सम्पन्न होता है। छात्रसंघ में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष , महामंत्री एवं पुस्तकालयमंत्री का चुनाव केवल कक्षा प्रतिनिधि ही लड़ सकते है कक्षा प्रतिनिधि बनने के लिए अपनी–अपनी कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करना, सर्वाधिक उपस्थित रहना एवं सर्वाधिक उच्च अनुशासन, आचरण व्यवहार वाला होना आवश्यक होता है। छात्रसंघ के प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी महाविद्यालय की विभिन्न समितियों में सहभागिता के माध्यम से प्रबन्धन तथा नेतृत्व के कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है।

विभाग द्वारा गॉव–गोद लेकर जनजागरण

महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग अपने आस–पास के गावों में से एक गॉव गोद लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं की जानकारी, स्वच्छता, सामाजिक समरसता इत्यादि विषय पर कम से कम वर्ष में चार बार जनजागरण अभियान चलाया जाता है। इससे गॉवों में जागरूकता के साथ–साथ विद्यार्थियों में भी सामाजिक संवेदना का विकास होता है।

महाविद्यालय के प्रमुख प्रकाशन

महाविद्यालय वार्षिक शोध पत्रिका 'विमर्श (**ISSN-0976-0849**) एवं अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'मानविकी' (**ISSN-0976-0830**) नाम से शोध पत्रिका प्रकाशित करता है। अर्द्धवार्षिक शोधपत्रिका 'शोध पत्रिका' (**ISSN-0975-1254**), इतिहास दर्पण (**ISSN-0974-3065**), मासिक योगवाणी (**RNI-NP/GR/125/14**) के प्रकाशन में महाविद्यालय सहभागी है।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई केन्द्र

महाविद्यालय द्वारा अपने आस–पास के ग्रामीण महिलाओं, छात्राओ और अपने महाविद्यालय के छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से 6 माह का पाठ्यक्रम का संचालन 2010 से कर रहा है।

महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

महाविद्यालय अपने आस–पास के गॉवों तथा महाविद्यालय के इच्छुक छात्र–छात्राओं को निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हे दक्ष एवं कौशल युक्त युवा गढ़ने की भूमिका 2009 से निर्वहन कर रहा है।

ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र

गुरू श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के सहयोग से ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र द्वारा महाविद्यालय के आस–पास के गॉवों के गरीब लोगों के लिए सप्ताह में दो दिन (बुधवार एवं वृहस्पतिवार) निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श एवं औषधि वितरण किया जाता है।

सांसद आदर्श गॉव जंगल औराही में सम्पूर्ण साक्षरता

सांसद आदर्श गॉव जंगल औराही को महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के बल पर साक्षर बनाया गया। इस अभियान में गॉव के 14 टोलो में 34 साक्षरता केन्द्र में 52 स्वयं सेवकों द्वारा 407 निरक्षर लोगों को साक्षर बनाया गया।

सांसद आदर्श गॉव डॉगीपार में सम्पूर्ण साक्षरता

महाविद्यालय के 50 छात्र–छात्राओं ने 13 नवम्बर से 26 नवम्बर 2017 तक सांसद आदर्श गॉव डांगीपर के 216 निरक्षर लोगो को सम्पूर्ण साक्षर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

देश की स्वच्छता रैंकिंग में 170 विश्वविद्यालयों– महाविद्यालयों में महाविद्यालय भी

25 अगस्त को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा देश भर के विश्वविद्यालयों – महाविद्यालयों में 'स्वच्छता रैंकिंग ऑफ हायर एजुकेशनल इन्स्टीट्यूशन्स' के अन्तर्गत चयनित 170 विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़ ने भी अपना स्थान बनाई। देश भर से 2600 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के मूल्यांकन के बाद 170 कॉलेजों को स्वच्छता रैंकिंग हेतु चुना गया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित तीन सदस्यीय समिति ने महाविद्यालय का निरीक्षण किया।

महाविद्यालय को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान

- डॉ. विजय कुमार चौधरी, असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'शिक्षक श्री सम्मान 2008' से अंलकृत किया गया।
- महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना को समाज में अनुकरणीय एवं सक्रिय योगदान के लिए दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना 2010–2011 का महाविद्यालय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय को महाराणा प्रताप परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में वर्ष 2014 का श्रेष्ठतम संस्था का गुरू श्रीगोरक्षनाथ स्वर्ण पदक उ0प्र0 के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा प्रदान किया गया।
- डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, को महाराण प्रताप शिक्षा परिषद को वर्ष 2014 का श्रेष्ठतम शिक्षक का योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्ण पदक उ0प्र0 के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा

प्रदान किया गया।

- महाविद्यालय को दैनिक हिन्दुस्तान द्वारा आयोजित 'हरियाली प्रतियोगिता' में पर्यावरण संरक्षण में योगदान के लिए सम्मानित किया गया।
- महाविद्यालय को सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सांस्कृतिक, साहित्यिक एंव सामाजिक संस्था संगम द्वारा स्वर्गीय चन्द्रकान्ति चन्द स्मृति संगम सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना को विशेष उपलब्धि अर्जित करने के कारण सत्र 2014–2015 हेतु दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय को गुरू श्रीगोरक्षनाथ ब्लड बैंक द्वारा महाविद्यालय द्वारा नियमित तथा ब्लड बैंक को जब कभी भी रक्त की आवश्यकता हो, रक्तदान करते रहने पर 2015 का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में वर्ष 2018 का श्रेष्ठतम् संस्था का गुरू श्रीगोरक्षनाथ स्वर्ण पदक भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद नई दिल्ली जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत संस्थान है, के द्वारा 05 से 07 नवम्बर 2015 को महाविद्यालय की गुणवत्ता जांचने हेतु तीन सदस्यीय पीयर टीम ने महाविद्यालय के विविध गतिविधियों एवं आयामों का मूल्यांकन कर 'बी' श्रेणी प्रदान किया।